ओ कब जाऊंगा बृज़ धाम

श्री हरिदास
तरज़:-कोई बिछुड़ गया मिलके

ओ कब जाऊंगा बृज़ धाम,बृज़ धाम हां बृज़ धाम
ओ कब....

वृन्दावन की कुंज गलिंन में,यमुना तट और बन्सीं वट में
मिल जायें घनश्याम
ओ कब....

बरसानें की ऊंची अटारी,जहां बिराजे शामा
प्यारी पुराणों हो सब काम
ओ कब....

पागल मन की आस यही है,जीवन में बस प्यास यही है
धसका हो वहीं विश्राम
ओ कब.....।

रचना:-बाबा धसका पागल पानीपत
फोन:-7206526000

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33407/title/O-KAB-JAUNGA-BRAJ-DHAM

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |